

कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 7

अपराजिता

शिवानी (1923 -2003)

भाग – 2

कीर्ति बसुमतारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उसने मुझे तस्वीरें दिखाईं। समस्त सामग्री उसके हाथों की पहुँच तक ऐसे धरी थी कि निचला धड़ ऊपर उठाए बिना ही वह मनचाही सामग्री मेज पर से उत्तार सकती थी। किन्तु उसकी आज की इस पटुता के पीछे है एक सुदीर्घ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका। स्वयं डॉ. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, "हमने आज तक दो व्यक्तियों द्वारा सम्मिलित रूप में नोबल पुरस्कार पाने के ही विषय में सुना था, किन्तु आज हम शायद पहली बार इस पी-एच.डी. के विषय में भी कह सकते हैं।

पटुता – निपुण यातनाप्रद – कष्ट दिया

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

देखा जाए तो यह डॉक्टरेट भी संयुक्त रूप से मिलनी चाहिए, डॉ. चंद्रा और उनकी अद्भुत साहसी जननी श्रीमती सुब्रह्मण्यम् को। पच्चीस वर्ष तक इस सहिष्णु महिला ने पुत्री के साथ-साथ कैसी कठिन साधना की और इस साधना का सुखद अंत हुआ 1976 में, जब चंद्रा को डॉक्टरेट मिली माइक्रोबायोलॉजी में। अपंग स्त्री-पुरुषों में, इस विषय में डॉक्टरेट पाने वाली डॉ. चंद्रा भारतीय हैं। जब इसे सामान्य ज्वर के चौथे दिन पक्षाघात हुआ तो गरदन के नीचे इसका सर्वांग अचल हो गया।

पक्षाघात–অৱস হৈ পৰা শৰীৰৰ অংশ (Paralysis)
सर्वांग– সম্পূর্ণ শৰীৰ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भयभीत होकर हमने इसे बड़े-से-बड़े डॉक्टर को दिखाया। सबने एक स्वर में कहा आप व्यर्थ पैसा बरबाद मत कीजिए। आपकी पुत्री जीवनभर केवल गरदन ही हिला पाएगी। संसार की कोई भी शक्ति इसे रोगमुक्त नहीं कर सकती।"

सहसा श्रीमती सुब्रह्मण्यम् का कंठ अवरूद्ध हो गया, फिर वे धीमे स्वर में मुझे बताने लगीं, "मेरे गर्भ में तब इसका भाई आ गया था। इसके भयानक अभिशाप के बावजूद मैंने कभी विधाता से यह नहीं कहा कि प्रभो, इसे उठा लो, इसके इस जीवन से तो मौत भली है।

कंठ अवरूद्ध होना– আৱেগিক ভাৱে কব নোৱাৰা

मैं निरंतर इसके जीवन की भीख ही माँगती रही। केवल सिर हिलाकर यह इधर-उधर देख-भर सकती थी। न हाथों में गति थी, न पैरों में, फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी। एक आर्थोपेडिक सर्जन की बड़ी ख्याति सुनी थी, वहीं ले गई।"

एक वर्ष तक कष्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके ऊपरी धड़ में गति आ गई, हाथ हिलने लगे, नन्हीं उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं। निर्जीव धड़ को मैंने सहारा देकर बैठना सिखा दिया। पाँच वर्ष की हुई, तो मैं ही इसका स्कूल बनी।

उपचार– चिकित्सा

मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया, सरस्वती स्वयं ही जैसे आकर जिह्वाग्र में बैठ गई थी। बंगलौर के प्रसिद्ध माउंट कारमेल में उसे प्रवेश दिलाने में मुझे कॉन्वेंट द्वार पर लगभग धरना ही देना पड़ा।

"नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम्", मदर ने कहा, "हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की व्हील चेयर लेकर कौन पूरे क्लास रूम में घुमाता फिरेगा ?"

"आप चिंता न करें मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी।"

और फिर पूरी कक्षाओं में अपंग पुत्री की कुरसी की परिक्रमा मैं स्वयं कराती।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

वे पीरियड-दर-पीरियड उसके पीछे खड़ी रहती। प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चंद्रा ने स्वर्ण पदक जीते। बी.एस.सी. किया, प्राणिशास्त्र में, एम.एस.सी. में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बंगलौर के प्रख्यात इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की। केवल अपनी निष्ठा, धैर्य एवं साहस से पाँच वर्ष तक प्रोफेसर सेठना के निर्देशन में शोधकार्य किया। इसी बीच माता-पिता ने पेंसिलवानिया से व्हील चेयर मँगवा दी, जिसे डॉ. चंद्रा स्वयं चलाती हुई पूरी प्रयोगशाला में बड़ी सुगमता से घूम सकती थी।

निष्ठा– निष्ठा

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

लैदर जैकेट के कठिन जिरह-बख्तर में कसी उस हँसमुख लड़की को देख मुझे युद्ध-क्षेत्र में डटे राणा साँगा का ही स्मरण हो आता था। क्षत-विक्षत शरीर में असंख्य घाव, आभामंडित भव्य मुद्रा।

"मैडम, आप तो लिखती हैं, मेरी ये कविताएँ देखिए। कुछ दम है क्या इनमें ?"

क्षत-विक्षत – আঘাতগ্রস্থ হোৱা
আভামংডিত – উজ্জলতাৰে ভৰা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मैंने जब वे कविताएँ देखीं, तो आँखें भर आईं। जो उदासी उसके चेहरे पर कभी नहीं आने पाई, वह अनजाने में उसकी कविता में छलक आई थी। फिर उसने कढ़ाई बुनाई के सुंदर नमूने दिखाए। लड़की के दोनों हाथ जैसे दोनों पैरों का भी काम करते हों, निरंतर मशीनी खटखट में चलते रहते हैं। जर्मन भाषा में माता-पुत्री दोनों ने मैक्समूलर भवन से विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की। गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली वह प्रथम अपंग बालिका थी। यही नहीं, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत दोनों में उसकी समान रुचि है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अपने अलबम को अपनी निर्जीव टाँगों पर रख वह मुझे अपने चित्र दिखाने लगी। पुरस्कार ग्रहण करती डॉ. चंद्रा, प्रधानमंत्री के साथ मुस्कराती खड़ी डॉ. चंद्रा, राष्ट्रपति को सलामी देती बालिका चंद्रा और व्हील चेयर में लैदर जैकेट में जकड़ी बैसाखियों का सहारा लेकर डॉक्टरेट ग्रहण करती डॉ. चंद्रा।

"मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं डॉक्टर बनूँ। मैं अपंग डॉ. मेरी वर्गीज के सफल जीवन की कहानी पढ़ चुकी थी। परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी मुझे मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कहा गया मेरा निचला धड़ निर्जीव है, मैं एक सफल शल्य चिकित्सक नहीं बन पाऊँगी।

" किन्तु डॉ. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, "मुझे यह कहने में रंचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डॉ. चंद्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान योगदान दिया है(चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया।")

चंद्रा के अलबम के अंतिम पृष्ठ पर उसकी जननी का बड़ा-सा चित्र जिसमें वे जे.सी. बंगलौर द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं- 'वीर जननी' का पुरस्कार।

रंचमात्र – অলপো

बहुत बड़ी-बड़ी उदास आँखें, जिनमें माँ की व्यथा भी है और पुत्री की भी, अपने सारे सुख त्यागकर नित्य छाया बनी पुत्री की पहिया-लगी कुरसी के पीछे चक्र-सी घूमती जननी, नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लौंगों, अधरों पर विजय का उल्लास, जूड़े में पुष्पवेणी। मेरे कानों में उस अद्भुत साहसी जननी शारदा सुब्रह्मण्यम् के शब्द अभी भी जैसे गूंज रहे हैं, "ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।"

व्यथा – दुख उल्लास - उल्लास

मूल्यांकन



1 | माइक्रोबायोलॉजी में डॉक्टरेट पाने वाली अपंग भारतीय स्त्री कौन है?

क डॉ. चंद्रा

ख श्रीमती सुब्रह्मण्यम्

ग लेखिका

मूल्यांकन



2 'ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता...' यह किसके शब्द हैं?

क डॉ. चंद्रा

ख प्रोफेसर से

ग शारदा सुब्रह्मण्यम

मूल्यांकन



3 | लेखिका को चंद्रा की कौन-सी बात सबसे अधिक प्रभावित करती है?

क उसका गुस्सा

ख उसकी आवाज़

ग उसका हँसमुख और साहसी स्वभाव